विरह की वेदना

किससे कहूँ ये दिल का हाल,
तेरे बिना, हो गया हूँ मैं बेहाल।

हर पल तेरी याद में डूबा हूँ,
तेरे बिना बस ख़ामोश सा खड़ा हूँ।

जब तू थी, रंगीन था ये जहाँ ,
अब तेरे बिना, हर पल, हर लम्हा है वीरान।

तकलीफ़ ये मेरे दिल में समाई है,
तेरी यादों ने आँसू की धारा बहाई हैं।

किसे सुनाऊँ ये दर्द भरा गीत,
तेरे बिना सब लगता है मुझे अतीत।

लौट आ, अब और ना तड़पा मेरे मीत,
तेरे बिना प्रेम के जीवन का सुना पड़ा है संगीत।
तेरे बिना प्रेम के जीवन का सुना पड़ा है संगीत।

प्रेम ठक्कर

आकांक्षा

तुम्हारी राह तकते दिन, कटते नहीं कभी,
मन की गहराइयों में, बसी हो तुम कहीं।

आसमान की ऊँचाई में ढूंढता तुम्हें हर सुबह, हर शाम,
तुम्हें देखे बिना मिले ना चैन, ना मिले आराम।

तेरी मुस्कान की आकांक्षा, आँखों में बसी है,
हर धड़कन में तेरा नाम, मेरे चेहरे पे तेरे होठों की हंसी है।

सपनों के उस पार, कहीं तुम खड़ी हो,
मेरे लिए अब भी तुम, एक उम्मीद की लड़ी हो।

तुम्हारी वो एक झलक, अब भी मेरी चाहत है,
हर आहट में तुम ही हो पास, यही प्रेम की रब से इबादत है।

प्रेम ठक्कर